ISSN No-2031-5063 Vol.1,Issue.VI/Dec 2011pp.1-4

Research Paper

मराठी रंगमंच और संगीत नाटक

संजीवनी दिपके
संशोधन छात्र
डॉ . बाबासहेब आंबेडकर
मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद .

प्रस्तावना

मराठी रंगमंच शुरू से ही अपने आप में एक समृध्द रंगमंच है, 1843 में सांगली के राज . श्री . चिंतामणराव पटवर्धनजी के सहयोग से विष्णुदास भावेजी ने 'सीता स्वयंवर' आख्यान का निर्माण किया, यहीं से मराठी संगीत रंगमंच का निर्माण माना जाता है, भावेजी ने अठराह वर्षो तक नाटक का व्यवसाय किया, 1885 में उन्होंने 'नाट्यकवितासंग्रह' प्रकाशित किया जिसमें आख्यान, ओवी, कविता और सुत्रधार द्वारा गायी जानेवाले पद रचनाओं का समावेश है,

किर्तन परंपरा -

भावेजी के जमाने में महाराष्ट्र में गोखले घराणे की शिक्षा लेकर आये सकारामबुवा काशीकर विष्णुदास भावेजी के संगीत गुरू थे, उससमय पौराणिक नाटक प्रकार में लोकप्रियक कीर्तन पध्दती का संगीत और गायकी थी, इसमें सुत्रधार यह एक ही व्यक्ती नाटक के प्रसंग के अनुसार संगीत तथा पद रचनायें कविताओं का निर्माण किया जाता था, इससमय नाटक कला का प्रेक्षक तथा रसिक वर्ग शिक्षित तथा शास्त्रीय संगीत का चहेता वर्ग उपलब्ध था, और प्रेक्षकों की अभिरूची को समझते हूए धृपद गानेवाले गायक भी उससमय महाराष्ट्र में उपलब्ध थे, संगीत की शिक्षा और अच्छी गायकी आवाज के कीर्तनकार उससमय संगीत की अभिरूची निर्माण करने का कार्य करते थे, कीर्तनकार की गायक में हरिदासी गायकी समाविष्ट थी, धृपद अंग भी पदरचनायें गाते समय शास्त्रीय कठोरता को थोडासा हटाकर उसे ललित स्वरूप दिया जाता, ओवी अथवा कामदा साकी दिंडी जैसे जातीवृत्तों को गाते समय इसकी काव्य पठण का स्वरूप बदलकर उसे रागदारी का साज चढाकर आकर्षक बनाया जाता, आगे चलकर ठुमरी प्रकार भी बंद होने के बाद इसकी विशिष्ट ढंग की गायत्री की छाप किर्तनकारों ने बहूजन समाजपर डाली थी, इससे यही प्रेतित होता है कि शुरू में ही संगीत रंगमंच पर संगीत को लेकर नये नये प्रायोगिकता का निर्माण होता रहा है जो समाज के सभी स्तर के प्रेक्षक तथा रसिकों को ध्यान में रखते हूए हुआ करता था, कथानक, संगीत, अलंकारिक भाषा के साथ साथ पारंपारिक वाद्य औरगन, तबला, सारंगी का उपयोग किया जाता। इश्वरस्तवन प्रारंभ करते हूए ह्यनमन नटवश विस्मय ताराह संगीत से आरंभ तथा दृश्य समाप्त होता है,

किर्लोस्करी संगीत

1980 में अण्णासाहब किर्लोस्करजी का 'संगीत शाकुंतल' नाटक रंगमंच पर आधुनिक नाट्यसंगीत को लेकर आया, इनसे पहले किर्तनकारों की गायकी का लोगोंपर प्रभाव रहा था, नारायण बूवा गोगटे ह्यफलटणकरह इनकी गायकी का प्रभाव संगीत प्रेमीयों पर था, लावणी बाज की अलग गायकी टप्पा इससमय प्रचलित थी, अण्णासाहब किर्लोस्करजी ने नाटक के दो संवादों ने बिच जो अवकाश निर्माण हुआ करता था उस अवकाश को भरने के हेतू, श्रोर्ता प्रेक्षकों की दृष्टी से मनोरंजन हेतूसे पद रचनाओं का तथा संगीत का निर्माण किया, किर्लोस्करी संगीत को संदर्भ में 4 अगस्ट 1975 के बळगाव समाचार वर्तमान पत्र मे भी इनके वैशिष्ट्येपूर्ण संगीत के बारे में लिखा गया था, अण्णासाहब किर्लोस्कर अपने संगीत नाटक को 'केशर की खेती' कहा करते थे जो अपने आप में एक बहोत बडा सच था, क्योंकि अण्णासाहब के पश्चात भी संगीत रंगमंच पर नाट्यसंगीत को लेकर नये प्रयोग किये गये, परंतु किर्लोस्करी संगीत का अपना अलग ही अस्तित्व था, जिसकी जगह कोई नहीं ले सका, अण्णासाहेब किर्लोस्कर ने अपनी नाट्य रचनाओं में पदों की रचना कर नाटक और रंगमंच के संदर्भ में एक अलग वैशिष्ट्येपूर्ण घटक की निर्मिती की है, एक नया परिणाम, रचनातत्व निर्माण किया है ऐसा कहना उचित होगा, किर्लोस्करजीके इस रचनातत्व का अनुकरण उनके काल के अन्य नाटककारों ने भी किया है, संगीत रंगमंच के इतिहास में नाटक संशयकल्लोळ, सौभद्र, शाकुंतल, स्वयंवर, एकच प्याला जैसी अजरामर कााकृतीयाँ हुयी है जिसके प्रयोग आज भी देखने को मिल्ते है,

वैशिष्टयेपूर्ण संगीत

कर्नाटकी संगीत का भी संगीत नाटक में उपयोग किया गया, सौभद्र नाटक में उपयोग किये गये इस कर्नाटकी संगीत का मराठी प्रेक्षकों ने स्वागत ही किया, लावणी ढंग की गायकी ने "वद जाऊकुणाला" जैसे पदों को अजरामर किया, उससमय यमन, भूप, विहाग बागेश्री काफी, झिंझोटी, जोगी, मल्हार, कानडा जैसे रागों का उपयोग किया जाता, खासकर प्रेक्षक नाटक के संगीत आयोजन का आनंद उठाने ही नाटक देखने नाट्यगृह में आते है इस बात को ध्यान में रखते हुए तथा प्रेक्षकों की नस को जानते हुए ही उससमय संगीत नाटक का निर्माण हुआ करता था, शेक्सपिअर के नाटकों का गद्य स्वरूप में रूपांतरण करते समय भी उसे संगीतमय रूप में मराठी में लाने का असफल प्रयास हुआ, जहाँ मराठी रंगमंच का अपना मूल ढाँचा विकसित था वहाँ इसप्रकार का प्रयास सफल नहीं हो सका, शेक्सपिअर के नाटक संगीत रंगमंच के अनुकूल नहीं थे,

अण्णासहब किर्लोस्करजी के पश्चात डोंगरे कंपनी, खांडीलकर, बाईकर संगीत मंडली, पाटणकर संगीत मंडली, श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर संगीत मंडली का योगदान रहा, रंगमंच पर संगीत निर्माण का कार्य किर्लोस्कर के पश्चात 20 साल चलता रहा परंतु किर्लोस्करी संगीत का अपना अलग महत्व था, 1911 में निर्माण हुये नाटक 'संगीत मानापमान' के संगीत रंगमंच का सूनहरा काल निर्माण किया,

भाऊराव कोल्हटकर

नाटक के आरंभ काल में नाटक को प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं थी, स्त्रिया नाटक देखने भी नहीं आती थी उससमय स्त्रियों का नाटक में सहभाग इस विषय में सोचा भी नहीं जा सकता था, ऐसी स्थिति में समाज में सुंदर, नाजूक तथा कोमल आवाज के पुरूष ही नाटक में स्त्री पात्र किया करते थे, अभिनय को साथ साथ उन्हें संगित की शिक्षा भी लेना अनिवार्य था, नाटक में स्त्रीपात्र निभनेवाले पुरूषों का विवाह भी होना कठिण था, ऐसी स्थिती में नाटक में स्त्री पात्रों कि भूमिका सशक्त रूप से निभानेवाले नटों की कमी थी, सुप्रसिध्द गायक नट भाऊराव कोल्हटकर 1882 साल में किर्लोस्कर नाटक मंडली में शामिल हूए, शाकुंतल नाटक की शकुंतला के रूप में उन्हें आज भी याद किया जाता है, गौतवर्ण, बांधा उच्चवर्गीय स्त्री की भूमिकाये उन्होंने रंगमंचपर अपने अभिनय सामर्थ्य और

गायकी के आधारपर इसप्रकार सादर की के आज भी आश्चर्य होता है कि एक पुरूष स्त्री भूमिका को इतना न्याय दे सकता है ॐ **1982** से **1901** याने की **19** वर्षो तक भाऊराव कोल्हटकरजीने अपने सामर्थ्य से संगीत रंगमंच पर अपना अस्तित्व बानायें रखा, इनके पश्चात चिंतोवा गुख़ कृष्णराव गोरे रामा डवरी जैसे अभिनय सम्राटों ने संगीत रंगमंच पर स्त्री पात्रों की भूमिकाये सशक्त रूप से निभाई , परंतु भाऊराव कोल्हटकरकी 'शकुंतला' को निभाने के लिए उनके जैसा हि सशक्त एवं सुंदर नट की आवश्यक्ता थी, किर्लोस्कर कंपनी को ऐसे ही नटकी आवश्यक्ता थी जो किसी साधारण नट में नहीं थी,

गंधर्वयुग

नारायण श्रीपाद राजहंस उर्फ बालगंधर्व इनका जन्म पूणे में **26** जून **1888** में हुआ, जब वे **1898** में **10** वर्ष के थे तब उन्हे लोकमान्य तिलकजीने 'बालगंधर्व' अशकर उपाथि दी थी कहकर तब से उन्हें बालगंधर्व कहकर बूलाया जाताा, किर्लोस्कर मंडली में नारायण राजहंस का प्रवेश हुआ तब नाटक में काम करने की तैयारी नहीं थी, उनका गाणा स्त्रीपात्रों को शोभा देनेवाला था, वे सिर्फ गाना सिखकर गवैया बनना चाहते थे, परंतु उनके अंदर की स्त्री पात्रों की पात्रता को देखकर गणपतरावजीने उन्हें समझाल्र स्त्रीपात्र 'शकुंतला' की भूमिका के लिए मनाया और किर्लोस्करी मंडली को नया वैभव प्राप्त हुआ, बालगंधर्व का स्त्री बांधा कोमल नाजूक आवाज की गायकी ने शारदा की भूमिका को अमर किया, देवलजीने बालगंधर्व को स्त्रीभुमिकाओं की शिक्षा देते समय स्त्रीयॉ कैसे हसती है रोती कैसे है चिडती कैसे है शर्माती कैसे है हुंदका कैसे देती है कुत्रिम कोप कैसे करती है लाड में कैसे आती है प्यार कैसे करती है स्त्रीयों के सभी अंगो को सिखाया था, स्त्रीयों की भावनाये बालगंधर्व ने अपने समर्थ अभिनय से संगीत रंगमंच पर जिसप्रकार निभाई और मराठी प्रेक्षकों रसिकों के दिलपर अनेकों वर्षो तक राज किया, बालगंधर्व ने सत्ताईस नाटकों में स्त्रीयों की भूमिका निभाई और नऊनाटकों में पुरूष की भूमिकायें निभाई, विशेष रूप से शारदा सुभ्रदा वसंत सेना सरोजिनी इन भुमिकाओसे रसिको को बालगंधर्व के अतुलनीय सौंदर्य मधूर गायन और अभिनय सामर्थ्य का प्रत्यक्ष अनुभव लेने का अवसर प्राप्त हुआ, उनकी भूमिकायें श्वेती रूकमिनी भामिनी और सिंधू की भूमिकायें भी इतनी लोकप्रिय हुयी थी कि आज भी इन भूमिकाओं को निभाने का सामर्थ्य शायद ही कोई रखता हो, बालगंधर्व की अभिनयशैली बालगंधर्व की गायकी संगीत इन युगों से ही बालगंधर्व ने मराठी संगीत रंगमंच पर 'गंधर्वयुग' का निर्माण किया, बालगंधर्व जैसे, अमर्याद लोकप्रियता शायद ही किसी नट को मिली हो, किर्लोस्कर कालखंड में नाटयरचना को कला की दृष्टी से ही देखा जाता परंतु आगेचलकर गंधर्वयुग में **1923** साल से नाटक व्यवसाय हो गया और नाटक के अर्थकारण की सरकार दरबार में नोंद होने लगी, नाटक पर टैक्स लगाना आरंभ हुआ, बालगंधर्व ने मराठी नाटक व्यवसाय को बडे पैमाने मे 'ग्लॅमर' प्रदान किया, मराठी संस्कृती का जतन एवं संवर्धन करनेवाला पूणे शहर एक प्रमुख शहर है यहींपर बालगंधर्व का जन्म एवं मृत्यु हुआ, इनके मृत्यु की पश्चात **26** जून **1968** साल में 'बालगंधर्व रंगमंदिर' का निर्माण पूने में किया गया, जिसका भूमिपूजन स्वयं बालगंधर्व के हातों किया गया था, उनकी मृत्यु के बाद आकाशवाणी केंद्र ने नाटयसंगीत की स्पर्धा आयोजित की जिसकी प्रेरणा से आशा खाडिलकर जैसी गायिका का उद्धार हुआ, बालगण्धर्व ने मराठी रंगमंच को समृद्ध एवं ग्लैमर बनाकर मराठी कला संस्कृती बलशाली बनाया है, जिनका योगदान इतिहास में मराठी रंगमंच का 'सुवर्णयुग' माना जाता है,

मराठी संगीत रंगमंच का संघर्ष युग

बोलपट के आगमन के पश्चात संगीत नाटक का सुवर्णयुग कुछ कम सा होने लगा, धिरे धिरे संगीत नाटक के प्रयोग कम होने लगे, बोलपट के आकर्षण में नयी पिढी सिनेमा घरों की ओर आकर्षित होने लगी, परंतु ऐसी स्थिती में भी नाटक का दिवाण एक वर्ग अस्तित्व में था जो अच्छे नाटक को देखने थिएटर की ओर आते, वसंत कानेटकर जयवंत दलवी प्र.के.अत्रे पु.ल.देशपांडे जैसे नाटककारों ने मराठी रंगमंच पर अपना अमूल्य योगदान दिया, फिर एक बार सिनेमा के आक्रमण के बाद भी मराठी रंगमंच नये रूप में अपना अस्तित्व लेकर खडा हुआ, मराठी रंगमंच पर फिर कोई बालगंधर्व निर्माण नहीं हुआ, अवकाश के बाद स्त्रियां भी नाटक में स्त्रीया की भूमिकाये करने लगी तथा नाटक देखने थिएटर में आने लगी, लेकिन समय के साथ साथ परिवर्तन होता यह निसर्ग का नियम है, इसी तरह मराठी संगीत रंगमंच का अस्तित्व भी परिवर्तीत हो गया, प्रायोगिक नाटकों का निर्माण होने लगा, प्रायोगिक सामाजिक राजकीय मानवी स्वभावगुणों को लेकर नाटक की कथावस्तू आने लगी संगीत में बदलाव आया, परंतु मराठी रंगमंच पर संगीत नाटक का अपना जो मूल अस्तित्व है इसे कोई भी नया पाडाव नहीं मिटा सका,

निष्कर्ष

जैसे कि प्रारंभकाल में राजाश्रम को लेकर नाटक किया जाता था आज भी सरकारी अनुदान को लेकर नाटक जारी है, भलेहि आज आधुनिक युग में सिनेमा संगीत को नये ढंग ग्लैमर के साथ प्रस्तुत किया जाता हो लेकिन कहते है ना की 'बाप' बाप होता है और बेटा ही होता है, इसीतरह सिनेमा टि.व्ही. को कितनी भी लोकप्रियता मिले ये लोगों के दिल पर राज नहीं कर सकते, रिमोट का बटन दबाने पर और सिनेमा घर के बाहर निकलते ही कुछ समय में हम उसे भूल जाते है, नाटक यह जिवित और प्रत्यक्ष कला है, रसिंको के साथ इसका आमने सामने का प्रत्यक्ष संवाद है, जो जिवित है, वो कभी नहीं मिट सकता, शायद यही वजह है कि आज भी माध्यमों की तुलना में नाटक अपना अस्तित्व बनायें हूए है, तांत्रिक उन्नति कितनी भी हो अपना मूल अस्तित्व होता है, उसे कभी भूलाया या नकारा नही जा सकता, अपनी संस्कृति को बचाये रखना तथा उसका संवर्धन करना यह हमारा कर्तव्य है, शरीर से आत्मा कथी अलग नहीं हो सकती, हमारी संस्कृति हमारी आत्मा है, नाटक के चहेता तथा नाटक के पूजारियों ने यही बात सरकार के ध्यान में लेकर लाकर देने का कार्य जारों से किया है, तभी तो आज सरकार नाटक कला तथा अपनी लोककलाओं के जतन तथा संवर्धन में लगी है, संगीत नाटक तथा मराठी संस्कृति के पूणे शहर से ही आज संगीत रंगमंच का पूनश्च आगमन सरकारी अनुदान तथा अन्य रसिकों के सहयोग से किया जा रहा है, जय माला शिलेदार किर्ता शिलेदार इनकी गंधर्वभूषण जयराम शिलेदार संगीत आज भी संगीत सौभद्र संगीत मानापमान एकच ज्याला जैसे नाटकों के प्रयोग औरंगाबाद में **13** मार्च **2011** में संपन्न हुआ, नाटयगृह में हाउसफूल उपस्थिति और संगीत नाटक रसीक की एक मौजूद पिढी को देखकर तो ऐसा ही प्रतित होता है कि इतने चढाव उतार के अनुभवों को साथ लेकर मराठी संगीत रंगमंच अपने मूल फॉम को लेकर आज भी अपना अस्तित्व बनाये हूए है,

संदर्भ सूची :

1. स्वरसेतू ह्यत्रैमासिकह डिसें **2005** संपादिका डॉ.सौ. चारूशीला दिवेकर नवी मुंबई.

2. लोकप्रश्न ह्यदिवाली अंकह दै. लोकप्रश्न संपादक दिलीप मधुकर खिस्ती समर्थ प्रिंटर्स ॲड पब्लीशर्स वीड.

3. ऐ होता गंधर्व : डॉ.राम म्हैसाळकर, महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळ मुंबई.

4. बालगंधर्व ह्यव्यक्ती आणि कार्यह : मोहिनी वर्दे राज्य मराठी विकास संस्था मुंबई.